Class - B.Com II
Subject - MFI
Paper - IV (S)
Topic - Paper Money
Lecture - 27
By Dr C.P. Sahu
Marwari College Dar

Paper Money पत्र मुद्रा :- ①

वस्तु मुद्रा एवं धातु मुद्रा के दोषों को दूर करने के लिए पत्र मुद्रा का प्रचलन हुआ। पत्र मुद्रा के आने से आर्थिक जगत में अभूतपूर्व परिवर्तन देखने को मिला। जिससे लेन-देन काफी सरल हो गया। पत्र मुद्रा का प्रचलन सर्वप्रथम चीन में हुआ। भारत में पत्र मुद्रा का प्रचलन 1806 ई० में हुआ।

कागज या पत्र मुद्रा विशेष किस्म के कागज पर छपा हुआ एक प्रतिज्ञा पत्र है जिसमें निर्गमन अधिकारी या केन्द्रीय बैंक के अधिकारी द्वारा लिखित राशि देने का वचन देता है। इस तरह पत्र मुद्रा से तात्पर्य सरकार या केन्द्रीय बैंक द्वारा निर्गमित उन कागजी नोटों से है जो सरकार अथवा केन्द्रीय बैंक के गवर्नर द्वारा लिखित राशि देने का वचन देता है। या विशेषताएँ

प्रो० क्राउथर के अनुसार - पत्र मुद्रा के चार अवस्थाओं के बारे में अपना विचार व्यक्त किया है :-

(1) जमाकर्ताओं को जमा के बदले में प्रमाण पत्र मिलता था। जमाकर्ता इन प्रमाणपत्रों को पेश करके बैंकों से रुपया प्राप्त कर सकते थे।

(2) कुछ लोकप्रिय बैंकों को सरकार द्वारा नोट निर्गमन करने का अधिकार दिया गया। ये नोट उन बैंकों द्वारा केवल अपने जमाकर्ताओं को ही दिए जा सकते थे।

(3) बैंकों को अपनी जमा रकम से भी अधिक रकम छापने का अधिकार सरकार द्वारा दिया गया।

(4) इसमें नोट निर्गमन का अधिकार केवल देश के केन्द्रीय बैंक को है। भारत में रिजर्व बैंक (केन्द्रीय बैंक) द्वारा

Scanned with CamScanner

नोटों को छापने एवं जारी करने का अधिकार सरकार द्वारा प्रदत्त है। पत्र मुद्रा जारी करने से पहले केन्द्रीय बैंक द्वारा नियमानुसार स्वर्ण अथवा विदेशी प्रतिभूतियाँ कोष में रखी जाती है। पत्र मुद्रा के नोट पर रकम (राशि), नोट का नम्बर, भारत के चिन्ह, माँगने पर अदा करने का वचन तथा निर्गमन अधिकारी (गवर्नर) का हस्ताक्षर होता है। पत्र मुद्रा विशेष प्रकार के टिकाऊपन कागज पर छापी जाती है उसकी छपाई भी तकनीकी ढंग से की जाती है जिससे उसकी नकल न किया जा सके।

पत्र मुद्रा के प्रकार :—

(1) प्रतिनिधि पत्र मुद्रा :- पत्र मुद्रा जारी करते समय नोट के मूल्य के बराबर सोना एवं चाँदी सुरक्षित कोष में रखा जाता है तो उसे प्रतिनिधि पत्र मुद्रा कहते हैं।

(2) विनिमेय पत्र मुद्रा - जब केन्द्रीय बैंक ऐसे पत्र मुद्रा जारी करती है कि जनता किसी भी समय उन्हें प्रमाणिक सिक्कों में बदल सकती है तब इसे विनिमेय या परिवर्तनशील पत्र मुद्रा कहते हैं। इस प्रणाली में सोना-चाँदी सुरक्षित कोष में शत-प्रतिशत नहीं रखा जाता। केन्द्रीय बैंक द्वारा यह वचन दिया जाता है कि इन नोटों के बदले में सरकारी खजाने से सोना-चाँदी ले सकता है।

(3) अविनिमेय पत्र मुद्रा - इस मुद्रा में सरकार द्वारा प्रमाणिक सिक्कों अथवा मूल्यवान धातुओं में बदलने का कोई आश्वासन या वचन नहीं देती है। सुरक्षित कोष में सरकारी प्रतिभूतियाँ, बॉण्डस, ट्रेजरी बिल तथा विदेशी विनिमय इत्यादि रखे जाते हैं।

(4) प्रादिष्ट पत्र मुद्रा - इस मुद्रा का निर्गमन संकटकाल के समय बिना किसी सुरक्षित कोष के किये जाते हैं। इसलिए इसे "संकटकालीन मुद्रा" (Emergency money) भी कहा जाता है। इस मुद्रा का निर्गमन सीमित मात्रा में किया जाता है।

Scanned with CamScanner

इस प्रकार बहुमूल्य धातुओं की उपस्थिति नोटों के निर्गमन के लिए आवश्यक नहीं रह गयी है। योजना के संचालन में होने वाली खर्चों की पूर्ति के लिए धन जुटाना पत्र मुद्रा निर्गमन द्वारा आसान हो गया है। पत्र मुद्रा के लाभ के साथ-साथ समाज को कई दुष्परिणाम भी भुगतने पड़े हैं।

<u>पत्र मुद्रा के लाभ या गुण</u> :-

(1) <u>मितव्ययिता</u> - पत्र मुद्रा अत्यन्त मितव्ययी होती है क्योंकि मुद्रा के निर्गमन में धातु के तुलना में बहुत कम व्यय होता है।

(2) <u>भुगतान में सरलता</u> - पत्र मुद्रा वजन में अत्यन्त हल्की तथा गिनने में सुविधाजनक होने के कारण बड़े-बड़े भुगतान आसानी से किया जा सकता है।

(3) <u>लोचदार</u> - पत्र मुद्रा के मात्रा में आवश्यकतानुसार कमी या वृद्धि की जा सकती है।

[illegible]

(4) संकटकाल में सहायक या सरकार को लाभ – पत्र मुद्रा संकटकाल में बहुत ही सहायक होती है क्योंकि सोना व चाँदी न होने पर भी आवश्यकतानुसार मुद्रा निर्गमन कर सकता है।

(5) ~~सरकार को लाभ~~ - बहुमूल्य धातुओं का विकास कार्यों में प्रयोग – पत्र मुद्रा के प्रयोग से धातुओं की बचत होती है। जिनका देश के विकास कार्यों की पूर्ति के लिए उपयोग किया जा सकता है।

पत्र मुद्रा के दोष एवं हानि :-

(1) मुद्रा प्रसार का भय - इसके अन्तर्गत मुद्रा प्रसार का हमेशा भय बना रहता है क्योंकि सरकार आवश्यकतानुसार कोषों में धातु रखे बिना भी पत्र मुद्रा निर्गमन करती है।

(2) सट्टेबाजी को प्रोत्साहन – पत्र मुद्रा के कारण मूल्यों में भारी परिवर्तन होते रहते हैं जिससे आर्थिक अस्थिरता पैदा हो जाती है। अस्थिरता के कारण सट्टेबाज वस्तुओं का कृत्रिम अभाव पैदा करते हैं जिससे मुद्रा का मूल्य गिरने लगता है।

Scanned with CamScanner

(3) जालसाजी की अधिक संभावना - पत्र मुद्रा की जाली छापना आसान है और साधारण व्यक्ति के लिए पहचानना कठिन हो जाता है।

(4) विमुद्रीकरण का भय - विमुद्रीकरण होने पर जनता को अत्यधिक हानि होती है क्योंकि ऐसी दशा में पत्र मुद्रा का कोई मूल्य नहीं रहता है। जैसा कि हमने देखा है कि देश में नोटबन्दी होने पर पुराने नोटों का कोई महत्व नहीं रहा।

इस प्रकार उपर्युक्त गुण-दोषों को ध्यान से देखने के बाद हम कह सकते हैं कि पत्र मुद्रा में लाभ की अपेक्षा हानि कम है। यह तो सरकार के नीति के ऊपर निर्भर करता है कि वह देश के लिए कौन सी प्रणाली का उपयोग करे। यदि इस पर नियंत्रण रखा जाए तो इससे समाज एवं देश को लाभ ही लाभ है। आधुनिक अर्थव्यवस्था के अंतर्गत लगभग सभी देशों ने पत्र मुद्रा के रूप में स्वीकार किया है।

Scanned with CamScanner